एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

गौवंशों में लम्पी स्किन रोग नियंत्रण/रोकथाम हेतु पशुपालकों को प्रभावी दिशानिर्देश

(*आर.एस. बोचल्या एवं प्रदीप कुमार कुमावत)
शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू (180009)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: rbochalya651@gmail.com

हाल ही में भारत के गौवांशों (Bovines) में गाँठदार त्वचा रोग या '**लंपी स्किन डिजीज़**' (Lumpy Skin Disease- LSD) के संक्रमण के मामले देखने को मिले हैं। पशुपालन विभाग ने कहा है कि जिस रोग का जन्म अफ्रीका में हुआ वह अप्रैल में पाकिस्तान होकर भारत आया। राजस्थान में लम्पी बीमारी का क़हर लगातार जारी है, गायों की मौत से हाहाकर मचा हुआ है। प्रारम्भ में (8 August) जैसलमेर और बाड़मेर जैसे सीमावर्ती जिलों में इसका प्रकोप हुआ तो यह क्षेत्र अब जोधपुर, जालोर, नागौर, बीकानेर, हनुमानगढ़ और अन्य जिलों में फैला हुआ था।

सरकार ने माना कि लम्पी संक्रमण से अब तक राजस्थान में 45 हज़ार गायों की मौत हो चुकी है और 10 लाख 36 हजार गौवंश फिलहाल इस बीमारी से संक्रमित हैं। प्रदेश के बारां जिले को छोड़कर हर जिले में लम्पी संक्रमण पशुधन को लील रहा है। लेकिन हकीकत ये है कि मौतों का आंकड़ा इससे कहीं ज्यादा है। खाद्य और कृषि संगठन(FAO) के अनुसार, इस बीमारी के मामलों में मृत्यु दर 10% से कम है।

लम्पी स्किन रोग/गाँठदार त्वचा रोग (LSD) क्या है:

यह वायरस '*कैप्रिपॉक्स वायरस*' (*Capripox virus*) जीनस के भीतर तीन निकट संबंधी प्रजातियों में से एक है, इसमें अन्य दो प्रजातियाँ शीपपॉक्स वायरस (*Sheeppox virus*) और गोटपॉक्स वायरस (*Goatpox virus*) हैं। लंबी त्वचा रोग एक वायरल बीमारी है, जो मवेशियों में लंबे समय तक रुग्णता का कारण बनती है। यह रोग पॉक्स वायरस लम्पी स्किन डिजीज वायरस के कारण होता है। यह पूरे शरीर में दो से 5 सेंटीमीटर व्यास की घाटों के रूप में प्रकट होता है।

यह रोग मच्छरों, मक्खियां और पशुओं की लार, दूषित जल, दूषित भोजन के माध्यम से एक पशु से दूसरे पशु में फैलता है।

यह रोग रोगी पशु के संपर्क से लार से तथा मवाद या जख्म से संक्रमित पानी से स्वस्थ पशुओं में फैल सकता है। रोगी पशु तथा इनके संपर्क में आने वाले व्यक्तियों के आवागमन से भी रोग फैलने की संभावना है।

रोग के लक्षण:-

- आमतौर पर हल्के से लेकर गंभीर रूप तक होते हैं।
- पशु को तेज बुखार हो जाता है, पशु स्वस्थ सुस्त, उदास तथा कमजोर हो जाता है, पशु चारा भी नहीं खाता है।

- पशु के गले व घुटनों के पास सूजन देखने को मिलती है तथा पशु लंगड़ा हो जाता है।
- त्वचा के नीचे आकार में 2-5 सेंटीमीटर दृढ़ स्पष्ट गोल पिंड पूरे शरीर में विकसित हो जाते हैं, चकत्ते बनना शुरू हो जाते हैं।
- 1 से 2 सप्ताह के अंदर घाव पड़ने लगते हैं। जिनसे खून बहने लगता है। इसके परिणाम स्वरूप रोग का संक्रमण शुरू हो जाता है जिससे संक्रमण ज्यादा फैलता है।
- इसके साथ-साथ संक्रमित पशुओं को सांस लेने में भी कठिनाई देखी जाती है।
- जब यह गांठे ठीक हो जाती है तो पशुओं के शरीर पर स्थाई निशान हो जाते हैं।
- मादा पशुओं का गर्भपात हो जाता है कई बार गाय की मौत हो जाती है।
- इसके अन्य लक्षणों में सामान्यतः आंख और नाक से पानी बहना, बुखार तथा दुग्ध उत्पादन में अचानक कमी आना, पशु का कमजोर होना आदि।

पशुपालक को सावधानियां बरतना आवश्यक:-

संक्रमण से पूर्व की सावधानियां:- पशुशाला और परिसर में सख्त जेल सुरक्षा उपायों को अपनाया जाए संक्रमित जानवरों व असंक्रमित जानवरों को अलग अलग रखा जाना चाहिए गांठो की जांच की जानी चाहिए। पशु चिकित्सक की सलाह से परजीवीनाशक दवाओं का उपयोग कर, मच्छरों का नियंत्रण करना चाहिए, जिससे कि रोग का संक्रमण अधिक ना हो। पशुशाला तथा आसपास के क्षेत्रों पर साफ सफाई का ध्यान रखें, स्वस्थ पशुओं में रोग से बचने के लिए टीकाकरण करवाया जाए रोग से संक्रमित परिसर वाहन आदि का नियमित अंतराल से सोडियम हाइपोक्लोराइट के 2% गोल अथवा अन्य उपयुक्त रसायनों द्वारा छिड़काव कर संक्रमित रहित करें।

संक्रमण के दौरान की सावधानियां:- प्रभावी क्षेत्र से जानवरों की आवाजाही से बचें प्रभावी जानवर को चारा पानी और उपचार के साथ झुंड से अलग रखा जाना चाहिए। रोग से संक्रमित पशुओं की देखभाल करते समय सभी आवश्यक सुरक्षा उपायों जैसे साबुन, सेनीटाइजर आदि का नियमित उपयोग करें, जिससे रोगी पशु से स्वस्थ पशुओं को बचाया जा सके, उपचार करने वाले व्यक्ति को हाथ में दस्ताने व मास्क पहनना चाहिए। पशुओं में किसी भी प्रकार के असामान्य लक्षण दिखाई देने पर अच्छे पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। रोगी पशुओं के दूध का उपयोग कम से कम 2 मिनट तक उबालकर किया जाना चाहिए रोगी पशु को संतुलित आहार, हरा चारा, दलिया, आटा आदि खिलाए ताकि पशु में रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि हो।

संक्रमण के पश्चात की सावधानियां:- रोग से स्वस्थ हुए पशुओं को पशु चिकित्सक के परामर्श से खानपान का विशेष ध्यान रखना चाहिए। मृत्यु के मामले में पशु को गहरी दफन विधि द्वारा नष्ट या वैज्ञानिक विधि से नष्ट किया जाना चाहिए। मृत पशुओं के स्थान को सोडियम हाइपोक्लोराइट 2 से 3% व अन्य उपयुक्त रसायनों द्वारा वी-संक्रमित करना चाहिए। मृत पशुओं के चारे दाने आदि को भी नष्ट कर दें एवं पुनः उपयोग में नहीं ले। पशुसाला को सोडियम हाइपोक्लोराइट से वी-संक्रमित करें।

रोग से बचाव हेतु गोट पॉक्स वैक्सीन के उपयोग के संबंध में दिशानिर्देश

रोग की रोकथाम हेतु संक्रमित पशुओं को 4 और 5 किलोमीटर परिधि के बाहर क्षेत्र के भीतर आते स्वस्थ होकर रिंग वैक्सीन किया जाना चाहिए। चार-पांच माह से अधिक आयु के समस्त स्वस्थ को पशुओं का टीकाकरण किया जाना चाहिए। टीकाकरण पशु चिकित्सक की सलाह से ही करवाएं किसी भी अन्य पशुपालक द्वारा/ स्वयं के स्तर पर अथवा अन्य व्यक्ति से नहीं लगवाए। टीकाकरण के पश्चात रोग प्रतिरोधक क्षमता आने में 14 से 21 दिन का समय लगता है, अतः इस अवधि में संक्रमण की संभावना हो सकती है।

वायरस का कोई इलाज नहीं होने के कारण टीकाकरण की रोकथाम एवं नियंत्रण का सबसे प्रभावी साधन है, त्वचा में द्वितीयक संक्रमणों का उपचार गैर-स्टेरॉयडल एंटी-इंफ्लेमेटरी (Non-Steroidal Anti-Inflammatories) और एंटीबायोटिक दवाओं के साथ किया जा सकता है। पशुपालक संक्रमित घाव को 1% पोटेशियम परमैग्नेट (लालदवा) के गोल से साफ कर एंटीसेप्टिक मल्लम लगाकर संक्रमण को नियंत्रण कर सकते हैं।

संक्रमण से बचाव के लिए औषधियों का प्रयोग

आयुर्वेदिक पशु चिकित्सा औषध व्यवस्था:- संक्रमण होने के बाद प्रथम 3 दिनों के लिए औषधि:- पान के पत्ते 10 ग्राम, कालीमिर्च 10 नग, नमक 10 ग्राम, गुड आवश्यकतानुसार उपरोक्त सामग्री एक खुराक की मात्रा है सभी का मिश्रण एक साथ करके, गुड़ के साथ मिलाकर लड्डू बना ले। पहले 3 दिनों तक संक्रमित पशु को 3 घंटे में एक लड्डू खिलाए।

संक्रमण होने के 4 - 14 दिन में देने वाली औषधि:- नीम के पत्ते एक मुट्ठी, तुलसी के पत्ते एक मुट्ठी, लॉन्ग 10 नग, लहसुन 10 कली, कालीमिर्च 10 ग्राम, छोटे प्याज-2, धनिया पत्ते 15 ग्राम, जीरा 15 ग्राम, हल्दी पाउडर 10 ग्राम, गुड आवश्यकतानुसार सभी का मिश्रण बनाकर लड्डू बना ले और सुबह-शाम पशु को खिलाएं।

खुले घाव के लिए स्थानिक उपचार:- नीम के पत्ते एक मुट्ठी, तुलसी के पत्ते एक मुट्ठी, लहसुन 10 कली, हल्दी पाउडर 10 ग्राम, मेहंदी पत्ते एक मुट्ठी, नारियल का तेल 500ml सभी को एक साथ पीसकर मिश्रण नारियल के तेल में धीरे-धीरे पकाकर तथा तेल ठंडा करें। नीम की पत्ती पानी में उबालकर घाव को साफ करने के बाद उपर्युक्त तेल का लेप कर दें।

लंबी स्किन रोग से बचाव एवं संक्रमित पशुओं के स्नान:- रोगी पशुओं के स्नान के लिए 25 लीटर पानी में एक मुट्ठी नीम के पत्ती का पेस्ट 10 ग्राम फिटकरी मिलाकर प्रयोग करना चाहिए इस गोल का स्नान के 5 मिनट पश्चात साफ पानी से स्नान कराना चाहिए।

लंबी स्किन रोग से बचाव एवं संक्रमित पशुओं के लिए दो धुपन की व्यवस्था:- संक्रमण रोकने के लिए पशु बाड़े में और गायों के बीच गोबर के ठाणे, गूगल, कपूर, नीम के सूखे पत्ते को डालकर सुबह-शाम धुआं करें।

राज्य सरकार दावा कर रही है, लंपी स्किन डिजीज की रोकथाम के लिए राजस्थान कोऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन एवं पशुपालन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में गोवंशीय पशुओं में टीकाकरण युद्ध गति से किया जा रहा है। इसके लिए सरकार ने आंकड़े भी जारी किए हैं। बताया गया है कि अब तक 27 जिलों में 6 लाख 87 हजार 375 पशुओं में टीकाकरण किया गया है। राजस्थान के पशुपालन मंत्री लालचंद कटारिया ने कहा, प्रदेश में अभी तक 6 लाख 87 हजार पशुओं का टीकाकरण किया जा चुका है।